

## विचार बिन्दु

किताबों में वजन होता है! ये यूँ ही किसी के जीवन की दशा और दिशा नहीं बदल देती। -इला प्रसाद

## शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि : वरदान या अभिशाप

बहुत सारे लोग हर नई चीज को संदेह की नजर देखते हैं। वे आशंकित रहते हैं कि जैसे ही कुछ नया उनके जीवन में आएगा, कुछ न कुछ अनिष्ट करेगा। याद कीजिए, जब मुद्रण चलन में आया तो कुछ को लगा कि इससे ज्ञान गलत हाथों में पहुंच जाएगा। जब ध्वनि मुद्रण (रिकॉर्डिंग) की शुरुआत हुई तो हमारे बहुत सारे बड़े गायक-गायिकाओं ने इससे दूरी बरती। जब कंप्यूटर के आने की आहट सुनाई दी तो इन पंक्तियों के लेखक सहित बहुतों को लगा कि इससे भयंकर बेरोजगारी का कहर टूट पड़ेगा। समय इस बात का साक्षी है कि बावजूद कुछ आशंकाओं के सही साबित होने के, मानवता ने सारे बदलावों को न केवल अपनाया, उनसे अपने जीवन को सुगम और बेहतर भी बनाया। सोचिये, क्या आज आप कंप्यूटर विहीन जीवन की कल्पना भी कर सकते हैं?

आज फिर इतिहास अपने आप को दुहरा रहा है। दुनिया भर में एक नई सुविधा ने हलचल मचा रखी है। इसका नाम है कृत्रिम बुद्धि। वैसे तो इस पर काम काफी पहले शुरू हो गया था लेकिन हाल के वर्षों में इसका बहुत तेजी से प्रसार हुआ है। तकनीक के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान गूगल की एक अधिकारी के अनुसार कृत्रिम बुद्धि विश्वभर में गूगल की सुविधाओं का उपयोग करने में भारतीय सबसे आगे है। मजे की बात यह कि हम ऐसी बहुत सारी सुविधाओं का जिनके बारे में शायद हममें से बहुतों को यह बात पता भी नहीं है कि वे कृत्रिम बुद्धि आधारित हैं, न केवल उपयोग करते हैं, वे हमारे लिए अपरिहार्य भी हो चुकी हैं।

जीवन के तमाम क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। कला-साहित्य-संस्कृति सब इससे लाभान्वित और प्रभावित हो रहे हैं। आप अपनी कल्पना के अनुसार चाहे जैसी तस्वीर रच सकते हैं, गाना बना सकते हैं, लेख लिख सकते हैं। कहना अनावश्यक है कि इस तकनीक और कौशल के बहुत सारे खतरे हैं। लेखक को लग सकता है कि अगर यह सब अधिक चलन में आ गया तो उसका क्या होगा? कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर आप एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। बहुत सारे लोग करते भी हैं। तो क्या सारे अनुवादक बेरोजगार हो जाएंगे? ऐसे बहुत सारे सवाल हर रोज उठते रहते हैं।

कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से जो बहुत सारे क्षेत्र उजड़ित, प्रसन्न और आशंकित हैं उनमें से एक बहुत बड़ा क्षेत्र शिक्षा का है। शिक्षा की दुनिया में इस नई सुविधा को लेकर बहुत सारी उम्मीदें और आशंकाएं दोनों हैं। इस बात पर बहुत सारे विमर्श हो रहे हैं कि क्या निकट भविष्य में कृत्रिम बुद्धि शिक्षकों को विस्थापित कर देगी? क्या कृत्रिम बुद्धि शिक्षा के प्रसार पर होने वाले मानवीय श्रम और व्यय को घटा देगी? क्या कृत्रिम बुद्धि शिक्षक के सहायक के रूप में सामने आएगी? क्या यह शिक्षा का पूरा चेहरा ही बदल कर देगी? अगर कृत्रिम बुद्धि से थोड़ा पीछे चलकर देखें तो तकनीक ने काफी कुछ बदला है। मोटे-मोटे और कई खण्डों वाले विश्व कोश लगभग अप्रासंगिक हो गए हैं। किसी जानकारी को हासिल करने के लिए आपको पुस्तकालय तक जाने की जरूरत लगभग खत्म हो गई है। सब कुछ आपकी हथेली में आ गया है। जिन चीजों को याद करने में हमें बहुत सारी ऊर्जा लगानी पड़ती थी, अब उन्हें याद रखने की जरूरत ही समाप्त हो गई है। ऐसे बहुत सारे बदलाव हुए हैं। ये बदलाव सकारात्मक हैं या नकारात्मक, इस बात से अलग हटकर इस बात को देखें कि ये बदलाव हो चुके हैं। आज कोई पहाड़े याद नहीं करता, क्योंकि यह सारा काम अधिक दक्षता और तीव्रता से कैलकुलेटर कर देता है। आज मुझे अपने चार आर्यायों के फ्रोन नम्बर भी याद नहीं है, क्योंकि ऐसा करने की कोई जरूरत ही नहीं रह गई है। ऐसे अनगिनत बदलाव हमारे चाहे अनचाहे हमारी जिंदगी का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

तो यह बात तो सुनिश्चित है कि शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि को आना ही है। बल्कि वह आने लगी है। भविष्य में उसका प्रयोग और ज्यादा बढ़ने वाला है। जब मैं भारत के संदर्भ में विचार करता हूँ तो पाता हूँ कि इस बात के दोनों ही पक्ष हैं। कृत्रिम बुद्धि अगर हमारी शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाएगी, तो उसके लिए कुछ चुनौतियाँ भी खड़ी करेगी। आइये, हम इन दोनों पक्षों पर विचार करते हैं। पहले सकारात्मक पक्ष को लें। मुझे कृत्रिम बुद्धि की सबसे बड़ी सुविधा इस बात में नजर आ रही है कि वह अत्यंत टचस्क्रीन या चैटबॉट के माध्यम से विद्यार्थी किसी भी समय व कहीं भी अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। इस सुविधा के लिए उन्हें विद्यालय परिसर में होना आवश्यक नहीं होगा। अगर वे अस्वस्थ हैं और घर पर हैं, या और किसी कारण से अवकाश पर हैं तो भी इस सुविधा से अपने अध्ययन को निर्बाध जारी रख सकेंगे। इससे जुड़ा एक और लाभ यह भी है कि इस तकनीक का उपयोग शिक्षा को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए भी किया जा सकता है। इससे उन विद्यार्थियों को भी शिक्षा मिल सकती है, जो किसी न किसी वजह से विद्यालय तक जा सकने में समर्थ नहीं हैं। कृत्रिम बुद्धि आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की सीखने की गति, समझने की क्षमता और उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शिक्षा सामग्री को अनुकूलित कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को उपयुक्त स्तर की शिक्षा देना सम्भव होगा, जो वर्तमान व्यवस्था में प्रायः सम्भव नहीं है।

भी समय व कहीं भी अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। इस सुविधा के लिए उन्हें विद्यालय परिसर में होना आवश्यक नहीं होगा। अगर वे अस्वस्थ हैं और घर पर हैं, या और किसी कारण से अवकाश पर हैं तो भी इस सुविधा से अपने अध्ययन को निर्बाध जारी रख सकेंगे। इससे जुड़ा एक और लाभ यह भी है कि इस तकनीक का उपयोग शिक्षा को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए भी किया जा सकता है। इससे उन विद्यार्थियों को भी शिक्षा मिल सकती है, जो किसी न किसी वजह से विद्यालय तक जा सकने में समर्थ नहीं हैं। कृत्रिम बुद्धि आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की सीखने की गति, समझने की क्षमता और उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शिक्षा सामग्री को अनुकूलित कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को उपयुक्त स्तर की शिक्षा देना सम्भव होगा, जो वर्तमान व्यवस्था में प्रायः सम्भव नहीं है। मुझे कृत्रिम बुद्धि का अधिक सार्थक उपयोग अध्यापन से अधिक आकलन और मूल्यांकन में नजर आता है। इसकी मदद से विद्यार्थियों की प्रगति का डेटा विश्लेषण करके उनकी कमजोरियों और ताकतों को जाना जा सकता है, और यह जानने के बाद उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण विधियाँ तैयार की जा सकती हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था की जो सबसे बड़ी कमजोरी है- मूल्यांकन का पक्षपात विहीन होना, उससे यह तकनीक काफी हद तक मुक्ति दिला सकती है। इस तकनीक का प्रयोग उत्तर पुस्तिकाओं के स्वचालित मूल्यांकन में किया जा सकता है, जिससे न केवल शिक्षकों का कार्यभार कम होगा मूल्यांकन प्रक्रिया में मानवीय त्रुटियों और दुष्टताओं की संभावना घटेगी। अगर कोई मुझे पूछे तो मैं इसे कृत्रिम बुद्धि का सबसे बड़ा योगदान कहना चाहूँगा। ऐसी और अनेक सुविधाएँ हैं जो कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से हमारी शिक्षा व्यवस्था को प्राप्त होने की सम्भावनाएँ हैं। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धि के अनुप्रयोग विकसित होंगे, इन सुविधाओं का भी विकास और विस्तार होगा।

अब थोड़ी बात चुनौतियों की भी कर ली जाए। सबसे पहली बात तो यह है कि हमारे पास साधनों की बहुत कमी है। कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग के लिए डिजिटल उपकरण की आवश्यकता होती है और उसके परिचालन के लिए इंटरनेट की निर्बाध जरूरत होती है। क्या हम इसके लिए पूरी तरह सज्ज हैं? केवल इतना ही नहीं, हमारे यहां तो बात-बात पर कानून और व्यवस्था के नाम पर इंटरनेट सुविधाओं को स्थगित करने का चलन है। ये सारी बातें इस सुविधा का कितना लाभ लेने देगी? फिर भी विचारणीय है कि क्या हमारा शिक्षक समुदाय, विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों का शिक्षक समुदाय इस सुविधा का लाभ विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए समुचित रूप से प्रशिक्षित हो पाएगा? और अगर हो भी गया तो क्या वह इस नवाचार के प्रयोग में रुचि लेगा? तीसरी बड़ी चुनौती हमारी भाषिक विविधता को लेकर है। यह सही है कि तकनीक पर अब केवल अंग्रेजी का वर्चस्व नहीं रह गया है और अनेक भारतीय भाषाओं का समर्थन उसे प्राप्त है, फिर भी देश की ज्यादातर भाषाओं का समर्थन तकनीक को मिलने में अभी काफी समय लगेगा। यह समर्थन मुख्यतः निजी क्षेत्र ही उपलब्ध करा रहा है और जहां उसे अपना लाभ नज़र नहीं आएगा, वहां वह ऐसा क्यों करेगा? शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के बढ़ते हस्तक्षेप को लेकर जो सबसे बड़ी आशंका मेरे मन में है वह यह है कि इससे मानवीय स्पर्श घटता जाएगा, और यह एक बहुत बड़ी दुर्घटना होगी। मैं मानवीय स्पर्श रहित शिक्षा को बहुत बड़े खतरे के रूप में देखता हूँ। मुझे आशंका है कि इस तरह की शिक्षा से हम जो पीढ़ी तैयार करेंगे वह हमारी बहुत सारी अपेक्षाओं की कसौटी पर खरी नहीं उतरेगी।

यहां मैंने शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग को लेकर दोनों पक्षों को सामने रखने का प्रयास किया है। एक ख़ास बात यह है कि ऐसा करने में मैंने खुद भी कृत्रिम बुद्धि का थोड़ा सहयोग लिया है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि दोनों ही पक्षों की जो बातें मैंने की हैं, वे असंतिम हैं। परिदृश्य बहुत तेजी से बदल रहा है। हर रोज नई सुविधाएँ सामने आ रही हैं। इसलिए यह बात भी क्वचित् ही बताएगा कि कृत्रिम बुद्धि शिक्षा के लिए वरदान साबित होती है या अभिशाप! (बंगलुरु प्रवास से)

-अतिथि संपादक,  
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल  
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

### राशिफल

सोमवार 18 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि सोमवार, विक्रम संवत् 2081, मृगशिरा नक्षत्र दिन 3.49 तक, सिद्ध योग सायं 5.22 तक, ऋषिगण कर्ण प्रातः 8.01 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

पंडित अनिल शर्मा

ग्रह स्थिति - सूर्य-बुधिक, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कर्क, बुध-बुधिक, गुरु-बुध, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

आज सवाय सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 3.44 तक है। भद्रा प्रातः 8.01 से सायं 6.56 तक है। आज सौभाग्य सुन्दर्य व्रत, चतुर्थी व्रत है।

श्रेष्ठ चोषडिया - अमृत - सूर्योदय से 8.13 तक, शुभ 9.32 से 10.52 तक, चत - 1.32 से 2.51 तक, लाभ-अमृत 2.51 से सूर्यास्त तक राहुकाल - 7.30 से 9.00 तक, सूर्योदय 6.53 सुयस्त 5.31

**मेघ**  
मेष - व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। योजनागत कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

**तुला**  
तुला - नवान कार्या के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**वृष**  
वृष - आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

**वृश्चिक**  
वृश्चिक - चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

**मिथुन**  
मिथुन - मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनासार बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**धनु**  
धनु - व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। नौकरी पैसा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**कर्क**  
कर्क - व्याक्तगत परिस्थितियों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। अनावश्यक समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। स्वभाव की तेजी पर ध्यान दे।

**मकर**  
मकर - स्वास्थ्य संबंधित चिंता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

**सिंह**  
सिंह - आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित खोस से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन होगा।

**कुंभ**  
कुंभ - व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चन दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों का निरास हो सकता है। नौकरी पैसा व्यक्तियों को भाग-दौड से राहत मिलेगी।

**कन्या**  
कन्या - व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

**मीन**  
मीन - परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।



राजेन्द्र भागवत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने देश के प्रबुद्ध नागरिकों, विशेषकर वरिष्ठजनों से यह अपील की थी कि वे सरकार के सामाजिक कार्यों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में अपना सहयोग प्रदान करें। इसी आन्वधान से उत्साहित होकर अंग्रेजी की एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर ने अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर, अपनी स्वेच्छिक संस्था के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की बालिकाओं के साथ काम करने का निर्णय लिया। पहले तो उन्होंने सरकार द्वारा संचालित समाज कल्याण विभाग के आवास गृहों में रह रही बालिकाओं को कार्डसलिंग और कौशल प्रदान करने का काम किया। इसके बाद, उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों की राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाली सातवीं से दसवीं तक की बालिकाओं को विद्यालय समय के बाद, विज्ञान, कंप्यूटर, अंग्रेजी और गणित में शिक्षण देना का काम किया। इसके परिणाम स्वरूप जो लड़कियाँ 40-50 प्रतिशत अंक प्राप्त करती थीं, वे 80- 90 प्रतिशत अंक बोर्ड की परीक्षाओं में ला सकीं। इसी प्रकार का काम इस संस्था ने जयपुर की अत्यंत निर्धन परिवारों की लड़कियों के साथ भी किया। यहां भी बड़े उत्साहवर्धक परिणाम आए। संस्था द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के साथ ही बालिकाओं में विभिन्न प्रकार के जीवन कौशल भी विकसित किए गए। इसी कारण ये बालिकाएं अब पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे का

अध्ययन कर रही हैं। गत वर्ष इस संस्था ने छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से एक शिक्षण केंद्र प्रारंभ किया। इसमें घरों में काम करने वाली बाइयों, दिहाड़ी मजदूरी करने वाली परिवारों के चार से दस वर्ष के बालक बालिकाओं को पढ़ाई-लिखाई के साथ सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान करने का कार्य प्रारंभ किया। इन्होंने इस कार्य के लिए कुछ समर्पित शिक्षिकाओं की भी अपने साथ जोड़ा, जिन्हें सरकारी शिक्षकों की तुलना में बहुत कम मानदेय दिया जाता है। इस संस्था का संचालन केवल अपने परिचितों और मित्रों से प्राप्त सहायता राशि से ही किया जा रहा है। इस केंद्र की लोकप्रियता के कारण कई बच्चों ने सरकारी विद्यालय, जहां मिड डे मील भी मिलता है, छोड़कर इस शिक्षण केंद्र में प्रवेश लिया। वर्तमान में यहां लगभग 90 प्रतिशत बच्चे नामांकित हैं। इन्हें समय-समय पर सहायककर्ताओं द्वारा अच्छा रचिकर नाशता अवश्य दिया जाता है।

कुछ अभिभावकों के आग्रह पर, संस्था के पदाधिकारियों ने इस केंद्र को प्राथमिक विद्यालयों में परिवर्तित करने की सोची। इस संस्था द्वारा प्राथमिक विद्यालय के रूप में मान्यता का प्रयास डेढ़ वर्ष से किया जा रहा है और अब तक सफल नहीं हो पाई है। इसी की वजह से संस्था को उल्लेख इस लेख में करने का प्रयास किया गया है, ताकि सरकार में बैठे लोग यह समझ सकें कि क्यों मन से समाज सेवा करने वाले लोग, आसानी से समाज सेवा के कार्य में सरकार के साथ नहीं जुड़ पाते? मान्यता के लिए जब जयपुर स्थिति शिक्षा संकुल में पता किया, तो बताया गया कि आजकल सारा काम ऑनलाइन होता है और मान्यता के लिए प्रस्ताव पत्र पोर्टल पर ही देना होता है, जो निश्चित अवधि में ही उपलब्ध होता है। चूंकि, यह अवधि गत वर्ष समाप्त हो चुकी थी, वह 2023- 24 में ऐसा करना संभव नहीं हो पाया। इस कार्यवाही को फिर इस सत्र में करने की कोशिश की गई। कई प्रकार की विस्तृत जानकारी पोर्टल पर

डालनी थी और कई दस्तावेज भी अपलोड करने थे जैसे किराया अनुबंध, भवन का पी डब्ल्यू डी से अनुमोदित मानचित्र, कमरों की संख्या, शिक्षकों की संख्या एवं संस्था का विस्तृत विवरण आदि-आदि। ये सब सूचनाएं पोर्टल पर डाल दी गईं, इस अपेक्षा में कि शीघ्र मान्यता मिल जाएगी। यह भ्रम शीघ्र ही दूर हो गया। सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद भी कोई प्रगति नहीं हो पा रही थी। अचानक एक दिन शिक्षा संकुल से एक लिपिक का फोन संस्था के सचिव के पास आया कि आपसे बताने के लिए मैंने सारे पत्रों और दस्तावेजों की एक प्रति लगाते हुए पूरी पत्रावली शिक्षा संकुल में संबंधित कार्यालय के पास भिजवा दी। इसके बावजूद कुछ समय बाद उसी लिपिक का फिर फोन आया कि उनके द्वारा दी गई पत्रावली में कई सारे दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं।

उल्लेखनीय है कि संस्था को सचिव और अध्यक्ष मेरे निकट के परिचित हैं, अतः मैंने उनकी सहायता करने की दृष्टि से शिक्षा संकुल के संबंधित लिपिक से बात की और इस कार्य में सहायता करने का आग्रह किया। उन्होंने तत्काल यह स्वीकार कर लिया कि उनके पास सारे दस्तावेज उपलब्ध हो गए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पूरी पत्रावली को निदेशालय, बीकानेर में भेजा जाएगा और वहां से मान्यता का पत्र प्राप्त होगा। अभी तक मुझे यह समझ में नहीं आया कि जब सारी कारवाही पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन होनी चाहिए थी तो सारी सूचनाओं की हार्ड कॉपी क्यों मांगी जा रही थी? खैर, क्योंकि संस्था के हित में काम करना था, अतः जैसा मांगा गया, वह उन्हें दे दिया गया था। शिक्षा विभाग के अधिकारी इस शिक्षण केंद्र को देखकर गए थे।

चूंकि मैं व्यक्तिगत रूप से इस शिक्षण केंद्र को देखता रहा हूँ, मैं पूरे विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि सभी शिक्षक मनोयोग से वंचित वर्ग के बालक बालिकाओं को न केवल भाषा

एवं गणितीय शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, अपितु उनके सर्वांगीण विकास हेतु जीवन कौशल को आवश्यक क्षमताएं भी उनमें विकसित कर रहे हैं। बीकानेर निदेशालय में पत्रावली पहुंचने के बाद भी जब कई दिनों तक कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई तो मैंने अपने स्तर पर इस बारे में जानकारी करने का प्रयास किया। विभिन्न स्तरों पर बात करने के साथ ही निदेशक, सचिव शिक्षा से भी आग्रह किया, क्योंकि एक पुनीत कार्य में सहयोगी बनने की इच्छा मेरे मन में थी। उनसे बात करने का भी कोई असर नहीं हुआ और किसी भी प्रकार के कोई अनुमोदन की सूचना वहां से प्राप्त नहीं हुई। कुछ समय बाद, पोर्टल पर यह लिखा कि उनके प्रस्ताव में अनेक प्रकार की आपत्तियां हैं, पाठकों के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि संस्था के इस केंद्र पर 5 शिक्षिकाएं कार्यरत हैं जबकि अधिकांश राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में एक या दो शिक्षक हैं।

कैसी विडंबना है कि जो शिक्षा अधिकारी एक समर्पित स्वेच्छिक संस्था के प्रस्ताव में हर तरह की अड़चन डालने का प्रयास कर रहे हैं, उन्होंने सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों को शायद कभी देखा ही नहीं है! अधिकांश विद्यालय एक या दो कमरों में चलते हैं एवं बहुत ही गंदगी का वातावरण में संचालित हैं, कितने बच्चे उन्हीं संस्था द्वारा संचालित शिक्षण केंद्र को प्राथमिक विद्यालय के रूप में मान्यता प्रदान करने का अवसर मिला तो अपनी सारी विद्वता इसी में लगा दी कि, कैसे इस काम को रोका जाए? बाद में, किसी ने यह भी बताया कि यदि आपके स्कूल का निरीक्षण करने के लिए जो शिक्षा अधिकारी आए थे, उनकी ठीक तरह 'आवभगत' कर ली गई होती, तो आपको शीघ्र मान्यता मिल चुकी होती।

इस कथन में कितनी सच्चाई है, यह कहना तो कठिन है। इस संस्था के पदाधिकारी, प्रारंभ से नैतिक मूल्यों के वाहक रहे हैं और इसी के आधार पर पूरी समर्पण भावना से काम कर रहे हैं, इसीलिए उन्हें यह अनैतिक तरीका कतई मंजूर नहीं था। शायद इसी कारण, उन्हें

आइ.ए.एस. (पूर्व आई.ए.एस.)

## पी.ओ.पी. फैक्टरियों के धुएं से खारा गांव के ग्रामीण परेशान

प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने जब यहां का एयर क्वालिटी इंडेक्स नापा तो 900 आया, जो पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा है

गांव में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर जा पहुंचा है इसका मुख्य कारण गांव से सटी 40 से अधिक पीओपी फैक्टरियों से निकलने वाला धुआं बताया जा रहा है

पीओपी फैक्टरियों से निकलने वाला धुआं बताया जा रहा है

खारा गांव में वायु प्रदूषण की जांच के लिए प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने तीन अलग-अलग लोकेशन पर लोगों के

बनाया गया था। 125 में से 40 फैक्टरियों को उस जेन में भूखंड दिए गए थे। उस समय गांव की आबादी कम थी। अब आबादी मिनरल जेन के करीब आ गई है। दोनों के बीच केवल एक सड़क का ही फासला है। जब हवा गांव की तरफ होती है तो सांस लेना भी दूधर हो जाता है। प्रदूषण नियंत्रण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी का कहना है कि सभी फैक्टरियां एक साथ चलती हैं। गांव में वायु प्रदूषण का मानक 900 एक्वआई आना इसका सबसे बड़ा कारण है।

प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अनुसार खारा गांव से सटे मिनरल जेन को अन्यत्र शिफ्ट करना ही इस समस्या का समाधान है। दरअसल यह समस्या पिछले तीन सालों में ही पैदा हुई है। पिछले साल मई में संभागीय आयुक्त ने इस मुद्दे पर बैठक भी बुलाई थी। उस बैठक में 40 फैक्टरियों को अन्यत्र शिफ्ट करने पर चर्चा हुई थी, लेकिन उस पर अमल नहीं हो पाया और मामले को दबा दिया गया।

पीओपी फैक्टरियों के प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद ठक्कराल का कहना है कि दाम, सीओपीडी का प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है। पीओपी

को फैक्टरियों से निकलने वाला धुआं

स्वस्थ संबंधी बीमारियों का कारण बन रहा है। वहीं, पीवीएम हाँसिलय के वरिष्ठ स्पिन रोग विशेषज्ञ डॉ. आरडी मेहता का कहना है कि धुएं के कारण त्वचा संबंधी बीमारियाँ नहीं होती। इसका कारण कुछ और हो सकता है। परविंद्र सिंह राठौड़, अध्यक्ष, खारा उद्योग संघ ने बताया कि मिनरल जेन रिको ने काटा था। उस वक्त उन्हें गांव की सीमा का ध्यान रखना चाहिए था। अब पॉल्यूशन विभाग की गाइड लाइन के तहत पीओपी वाले काम कर रहे हैं। सबसे बड़ी सफाई की समस्या है। गाड़ियों का पॉल्यूशन काफी ज्यादा है। रिको को सड़कों की सफाई करनी चाहिए। राजकुमार मीणा, क्षेत्रीय अधिकारी, राज्यस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल बीकानेर का कहना है कि खारा गांव के पास पीओपी की 40 फैक्टरियों से निकलने वाले धुएं से सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण फैल रहा है। उन्हें बंद कर दूसरी जगह शिफ्ट करना ही समस्या का समाधान है। हमारा सर्वे चल रहा है। अगले सप्ताह तक इसकी रिपोर्ट प्रशासन, रिको और सरकार को भेज दी जाएगी।

कई फर्जी रिसॉर्ट्स लिस्टेड हैं। जबकि यह रिसॉर्ट्स धरातल पर हैं ही नहीं। इन वेबसाइट पर ट्रेवलर से ऐसे कई कमेंट भी मिल जायेंगे, जिससे उन्होंने साफ तौर पर लिखा है कि बुकिंग दूसरे रिसॉर्ट के नाम से थी और उन्हें ठहराना नहीं आया गया। इसका मतलब साफ है कि लोगों ने फर्जी रिसॉर्ट लिस्टेड करवा दिए और बुकिंग आने पर आगे किसी रिसॉर्ट को बेच दी।

## जैसलमेर में सैलानियों से ठगी करने वाले 73 रिसॉर्ट्स पर केस दर्ज

जैसलमेर, (नि.सं.)। जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सम सैड ड्यूस में रिसॉर्ट्स की ऑनलाइन बुकिंग करके पर्यटकों के साथ ठगी की जा रही है। ट्रैवल वेबसाइट्स पर ऐसे फेक टेंट रिसॉर्ट्स दिखाए जा रहे हैं जो वास्तविकता में धरातल पर हैं ही नहीं। पुलिस ने ऐसे 73 फर्जी रिसॉर्ट्स के खिलाफ मामला दर्ज कर किया है। इसके साथ ही पुलिस ने बुकिंग डॉट कॉम, अगोडा, मेक माय

ट्रिप, ट्रिप एडवाइजर, यात्रा डॉट कॉम सहित विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर रिसॉर्ट्स को लिस्टेड करने वाली कंपनियों को भी ऐसे फर्जी रिसॉर्ट्स को वेबसाइट से हटाने को लिखा है। गौरतलब है कि सिम में वास्तविकता में तो 150 के करीब रिसॉर्ट्स हैं। लेकिन अलग-अलग ऑनलाइन वेबसाइट पर 400 से ज्यादा दिखा रहे हैं। यहां गूगल भी धोखा दे देता है। खाली

जमीन पर भी रिसॉर्ट बता रहा है। जबकि वास्तविकता में वहां कुछ भी नहीं है। ऐसे में अब आने वाले सेलानी ऑनलाइन रिसॉर्ट्स बुक कर धोखाधड़ी का शिकार हो रहे हैं। फेक रिसॉर्ट्स चलाने वाले इतने शाश्वर हैं कि उन्होंने गूगल मैप पर रिसॉर्ट की लोकेशन भी सेट करवा रखी है। गूगल की तरफ से बाईपैसलेट लेटर भी आता है, लेकिन ये लोग पोस्ट वितरण करने वाले से यह पत्र हासिल कर अपनी

लोकेशन सेट करवा देते हैं। दूसरे रिसॉर्ट के स्थान पर अपने रिसॉर्ट की लोकेशन तो कहीं किसी खाली पड़ी जमीन पर रिसॉर्ट की लोकेशन सेट करवा दी जाती है। जैसलमेर एसपी सुधीर चौधरी ने बताया कि ट्रैवल वेबसाइट पर भी रिसॉर्ट्स फेक रिसॉर्ट्स चलाने वाले अपने शाश्वर तरीके से ट्रैवल वेबसाइट के प्रतिनिधियों को भी दूसरे रिसॉर्ट बताकर लिस्टेड करवा लेते हैं। इन वेबसाइट पर

कई फर्जी रिसॉर्ट्स लिस्टेड हैं। जबकि यह रिसॉर्ट्स धरातल पर हैं ही नहीं। इन वेबसाइट पर ट्रेवलर से ऐसे कई कमेंट भी मिल जायेंगे, जिससे उन्होंने साफ तौर पर लिखा है कि बुकिंग दूसरे रिसॉर्ट के नाम से थी और उन्हें ठहराना नहीं आया गया। इसका मतलब साफ है कि लोगों ने फर्जी रिसॉर्ट लिस्टेड करवा दिए और बुकिंग आने पर आगे किसी रिसॉर्ट को बेच दी।